दूसरा अध्याय

स्वातंत्र्योत्तर काल के प्रमुख कहानीकार और नारी अस्मिता

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानिकारों ने नारी जीवन का सर्वांगीण चित्रण किया है । नारी को देवी के रूप में नहीं बल्कि हाड- मांस से युक्त चिंतन्शील प्राणी के रूप में इन्होंने चित्रित किया है। बदलते परिवेश के अनुसार नारी जीवन में आये बदलाव को इन्होंने अपनी कहानियो में भली भॉति अभिव्यक्त किया है। इन में से कुछ श्रेष्ठ कथाकारों का उल्लेख इस अध्याय में किया जाता है ।

अमरकांत

हिन्दी के समष्टिवादी साहित्यकारों में प्रमुख स्थान के अधिकारी अमरकांत का जन्म जुलाई **1935** को उत्तरप्रदेश के बलिया नामक गांव में हुआ। उनकी प्रमुख कहानियॉ हैं — 'ज़िन्दगी और जोंक', 'देश के लोग', 'मित्र मिलन', 'दोपहर का भोजन', 'हत्यारे', ' इन्टरव्यू', 'छिपकली', 'महान चेहरा'आदि।

अमरकांत की रचनाओं में पूॅजीवादी शोषण, बेकारी युगीन भ्रष्टाचार, अव्यवस्था, शासन की अक्षमता, गरीबी आदि गहन विषयों को सरल रूप में प्रस्तुत किया गया है। राजनैतिक एवं सामाजिक जीवन की विषमताओं का यथार्थ चित्र भी उनकी रचनाओं की विशेषता है। डॉ. महेश दिवाकर ने सही लिखा है — "इनकी सभी कहानियों में विसंगतियों, विषमताओं एवं सामाजिक असमानताओं के कारण त्रस्त मानव के टूटते प्रेम संबन्धों, घुटन, वेदना, कुंठा ओर संत्रास का यथार्थ चित्रण हुआ है"[1]

अमरकांत की कहानियों का मूलाधार मध्यवर्ग है ।मध्यवर्ग की जिन्दगी की यथार्थ ता को अपनी सूक्ष्म दृष्टि से अमरकांत ने पहचाना है और उसके बारीक से बारीक रेशे को अत्यन्त कुशलता से अभिव्यक्त किया है। नवीन आर्थिक परिस्थितियों से जूझता मध्यवर्गीय समाज उसकी विशेषतायें, पीडाएॅ, प्रवचनाएॅ और जीवन की भूख को लेखक ने अनुभव किया है और अपनी रचनाओं द्वारा पाठकों के सम्मुख अभिव्यक्त भी किया है। शहर में रहनेवाला. नौकरीपेशा मध्यवर्ग की विवशता, लाचारी एवं दयनीयता का मर्मस्पर्शी चित्रण उनकी रचनाओं में दर्शनीय है। उनकी

---

1 हिन्दी नई कहानी का समाज शास्त्रीय अध्ययन : डॉ. महेश दिवाकर, पृ. **216**

कहानियों में युवा लोग का जीवंत चित्रण देखने को मिलता है। "युगीन युवशक्ति के खोखलेपन और उददेश्यहीनता तथा उनकी कुंठा और निराशा का जैसा मार्मिक चित्र सहजता के साथ अमरकांत प्रस्तुत कर देते हैं वैसा कम कहानीकारों में मिलता है।" [2]

उषा प्रियंवदा

उषा प्रियंवदा का जन्म **24** दिसंबर, **1931** को कानपुर में हुआ।उनकी प्रसिद्ध कहानीसंग्रह हैं -'जिन्दगी और गुलाब के फूल','कितना बडा झूठ', ' कोई एक दूसरा', 'मेरी प्रिय कहानियॉ', 'शून्य' आदि।

औद्योगिकीकरण, भूमंडलीकरण, आधुनिकीकरण, विज्ञान की प्रगति, स्त्री शिक्षा तथा नौकरीपेशा के कारण पिछले बीस—पच्चीस वर्षो से विवाह की उम्र में मूलभूत परिवर्तन हुआ है। कभी—कभी अर्थाभाव के कारण भी विवाह की समस्या जडिल होती है। उषा जी ने अर्थ ाभाव के कारण उत्पन्न विवाह की समस्यायें, नौकरीपेशा युवती की समस्यायें, स्त्री—पुरूष के बीच में होनेवाला अनैतिक संबन्धों का तनाव और अनुभूतियों की टकराहट का जटिल रूप, संयुक्त परिवार की विडंबना आदि का यथार्थपरक चित्र प्रस्तुत किया है। "उषा प्रियंवदा की कहानियॉ सामाजिक वर्जनाओं और जीवन की निषेधवादी दृष्टि के विरोध में खुलेपन के आग्रह को रेखांकित करती हैं।उनकी कहानियों की नायिकाएँ दैहिक पवित्रतावाली मित्र को ढोते रहने से इनकार करती दिखायी देती है।" [3]

उषा प्रियंवदा की कहानियों के पात्र परंपरा के विरूद्ध आवाज़ उठाती हैं।उनके पात्र मृत परंपराओं, जड मान्यताओं तथा रूढियों पर आस्था नहीं रखती हैं।उनके पात्र जीवन की विसंगतियों, परंपरित एकरसता, असफलता तथा सूनेपन से मुक्त होने केलिए जागृत है। साधना अग्रवाल के अनुसार "उषा प्रियंवदा ने नारी जीवन की विसंगतियों को सोचा और समझा

---

2 हिन्दी कहानी समीक्षा और संदर्भ : डा. विवेकी राय़, पृ. **79 - 80**।

3 नयी कहानी ः पुनर्विचार : मधुरेश, पृ. **264**

है।परंपरित एकरसता ऊब असफलता तथा सूनेपन की पीडाओं से मुक्त होने की प्रकिया उषा जी की कहानियों में परिलक्षित होती है।वहॉ एक ओर संस्कारबद्ध जड़ता है तो दूसरी ओर नव्यतम सकियता एवं सजगता है।उषा के पात्रों में निरीहता नहीं है किन्तु कभी कभी अव्यवस्थित अवश्य प्रतीत होते हैं।"[4] नये मूल्यों को स्वीकारने केलिए छतपटाी आधुनिक नारी को उषा प्रियंवदा की कहानियों में देख सकते है।

कमलेश्वर

समांतर कहानी आन्दोलन के ध्वजवाहक कमलेश्वर का जन्म **6** जनवरी, **1932** को उत्तरप्रदेश के मैनपुरी में हुआ। कमलेश्वर जी के प्रमुख कहानी संग्रह हैं –'राजा निरबंसिया', 'खोई हुई दिशाएँ','मांस का दरिया','बयान', 'कस्बे का आदमी', 'कुहरा' आदि।हिन्दी साहित्य जगत को उनकी देन पर भारत सरकार ने उन्हें सन् **2005** में पद्मभूषण की उपाधी से सम्मानित किया।

कमलेश्वर सर्वथा एक मौलिक कहानिकार है ।वे कस्बे के आदमी के जीवन का चित्रकार हैं।उनके पात्र विीभन्न स्तरों पर महानगर बोध का मानसिक संकट झेलते है।उनकी कहानियॉ महानगर में रहनेवाले व्यक्ति के जीवन की यथार्थता, जनधर्मिता आदि को विभिन्न कोणों से उकेरने में सक्षम हैं। भाव बोध में इनकी कहानियॉ संक्रमण युग की समस्याओं को प्रस्तुत करती हैं।वर्तमान जीवन के अन्तर्विरोध और द्वंद्व की भी अभिव्यक्ति उनमें हुई हैं। "कमलेश्वर का सामाजिक दृष्टिकोण पारिवारिक संस्था और स्त्री पुरूष संबन्धों के संदर्भ में उदघाटित हुआ है।कहानियों के अन्तर्गत पारंपरिक मूल्यों के विघटन और आर्थिक संकट के कारण परिवारों के टूटते जाने और परिवार इकाई की सत्ता के समाप्त होते जाने की प्रकिया प्रस्तुत हुई है।स्त्री पुरूष संबन्धों के अन्तर्गत लेखकीय संवेदना परिवर्तित बोध को लक्ष्य बनाती हुई स्त्री मुक्तिकोण को प्रस्तुत करती है।इसके साथ साथ आरोपित स्वरूप तथा रूढमूल्यों से मुक्त

---

4 वर्तमान हिन्दी महिला कथा लेखन और दांपत्य जीवन : साधना अग्रवाल, पृ. **207**

होकर अपनी व्यक्तिसत्ता की सुरक्षा अपनी पहचान की तलाश तथा पुर्णत्व की खोज में लगे हुए स्त्री व पुरूष के बीच बदलते संबन्धों को व्यक्त करती है।" [5]

कमलेश्वर के नारी पात्र, नारी के प्रति प्राचीन भारतीय समाज जो परिकल्पना करते हैं उन सब बिंबों को चुनौती देती है। वे मध्यवर्गीय हिन्तुस्तानी पुरूष की अहं की ओर उंगली उठाती हैं।नारी मन की स्वाभाविक प्रबल इच्छा तथा नारी मन की करूण -कोमल - भावनाओं, आशा -आकांक्षाओं और समस्याओं को महत्वपूर्ण ढंग से कमलेश्वर ने अभिव्यक्त किया है।

"नयी कहानी के उन्नायकों में कमलेश्वर का व्यक्तित्व इसलिए अधिक सजग माना गया है कि उन्होंने अपनी सभी रचनाओं में पात्रों की स्थितियों पर संवेदनाओं को प्रमुखता दी है।उनकी समस्त कहानियों का आधार मध्यवर्गीय जीवन है।परिवर्तित सामाजिक पारिवारिक सन्दर्भो में पिसकर अपने अस्ति5व खो जानेवाली मध्यवर्गीय जनता को उन्होंने अपनी कहानियों का केन्द्र बनाया है।" [6]

डॉ. कामिनी बाली

डॉ. कामिनी बाली का जन्म **1950** में हुआ।उसकी प्रमुख कहानीसंग्रह है 'उस दिन के बाद' आदि।सर्वोत्कृष्ट संपादक **1998** ,हिन्दी अकादमी दिल्ली।समन्वय श्री **1997,** साहित्य समन्वय मंच, साहित्य श्री **1999** साहित्य विकास परिषद आदि पुरस्कारों से वे सम्मानित हुई हैं।

पुरूषों के अत्याचारों के विरूद्ध आवाज़ उठानेवाली अस्मितायुक्त नारियों को डॉ .कामिनी बाली की कहानियों में देख सकते है।उनके पात्र जीति जागती है।नारी की असली जिन्दगी का सजीव चित्रण भी हुआ है। "डॉ .कामिनी बाली की कहानियॉ सत्य और संदर्भ की

---

5 कमलेश्वर का कथा साहित्य : डॉ. माधुरी शाह, पृ. **139**

6 संग्रथन : नवंबर **2006,** पृ. **23**

चुनौतियॉ हैं।कल्पना के कुहासे की भटकन के बजाय जीति जागती लहू-लुहान जिन्दगियां हैं।"[7]

कान्ता सिंहा

हिन्दी साहित्य जगत की सुविख्यात लेखिका कान्ता सिंहा का जन्म पाकिस्तान में स्थित पश्चिम पंजाब के गुजरांवाला नगर में हुआ।उनके प्रसिद्ध कहानीसंग्रह हैं 'कांच का रास्ता', 'घरौंदें', 'पलाश वन के', 'कौन सा पथ', 'नकली सच' आदि।यूनीसेफ द्वारा राष्ट्रीय हिन्दी सेवी सहस्राब्दी सम्मान से वे पुरस्कृत हैं।

सामाजिक, पारिवारिक और आर्थिक परिवेश में नारी की विवशता का जीवंत चित्रण उनकी कहानियों में देख सकते है।

कुसुम अंसल

कुसुम अंसल की कहानियॉ, नारी की भावनाओं का आदर न करके उसे केवल एक उपयोगी वस्तु माननेवले पुरूषों के विरूद्ध आवाज़ उठाती है ।दांपत्य की कठवाहट का सजीव अंकन भी देखने को मिलता है।परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व ही लेखिका की इन कहानियों में युग परिवेश के विविध संदर्भो के माध्यम से अभिव्यक्त है।उनके मत में नारी देह को आधुनिकता के नाम पर जिस तरह परोसा जा रहा है और स्वयक्त अपनी देह को लेकर वह जिस तरह उत्तेजित है, वह उसकी मुक्ति का रास्ता नहीं बन सकता।

कृष्णा अग्निहोत्री

कृष्णा अग्निहोत्री का जन्म राजास्थान के नमीराबाद में हुआ।उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं –'नपुंसक', 'जिंदा आदमी' आदि। 'बारह कथा संग्रह, दस उपन्यास और पॉच बच्चों के कहानी संग्रह प्रकाशित है।आत्मकथा 'लगता नहीं है दिल मेरा' विशेष चर्चित है।

---

7 उस दिन के बाद : डॉ. कामिनी बाली, आवरण से।

अपनी कहानियों के बारे में खुद कृष्णा अग्निहोत्री लिखती हैं "मेरी कहानियॉ किसी ढॉचे को तोडने की जगह उस ढॉचे की कमजोरी व्यक्त कर और क्या होना चाहिए इस कथन की अभिव्यक्ति करती हैं।जीवन दृष्टि का सही ढ़ॉचा क्या है इसे ये सहजता और मर्मिकता से कहना चाहती हैं'' [8]

कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों की समस्याओं, पुरूष की दहेज लोलुपता और इसके फलस्वरूप नारी की दयनीय दशा, बेरोजगारी की समस्या,आडंबर, भ्रष्टाचार, अनैतिक कार्यों का चित्र आदि देखने को मिलता है। कृष्णा अग्निहोत्री की राय में "मेरा नारीवाद स्वाभाविकता से पूर्ण है।नारी समझकर लिंग आधार पर उसे किसी भी त्रासदी को भोगने पर बाध्य नहीं करना चाहिए।"[9] आदर्श एवं यथार्थ का समन्वय करके यथार्थ के प्रति अधिक झुकाव उसकी रचनाओं में देखने को मिलता है। श्रीमती कृष्णा अग्निहोत्री के कथा साहित्य में एक ओर अनुभूति पक्ष की प्रबलता है, तो दूसरी ओर भाषा शैली का वैभव है।

कैलाश बनवासी

श्री कैलाश बनवासी का जन्म **18** मार्च **1965** को छतीसगढ़ के दुर्ग में हुआ।प्रसिद्ध कहानी संग्रह है 'लक्ष्य तथा अन्य कहानियॉ, 'बाज़ार में रामधन' आदि ।कहानी 'कुकरा कथा' पर 'कहानियॉ' पत्रिका द्वारा श्रेष्ठ युवा लेखन पुरस्कार **1987** ।जनवादी लेखक संघ इन्दौर द्वारा प्रथम श्याम व्यास पुरस्कार **1997**। दैनिक भास्कर द्वारा आयोजित 'रचना वर्ष' में कहानी 'जर अजर अमर' केलिए पुरस्कार **2002**।

श्री कैलाश बनवासी की कहानियॉ देश के विकास में सकिय भागीदारी निभानेवाले आम आदमी की कहानियॉ है।जीवन संघर्षों की कठोरता के साथ-साथ प्यार की कोमलता भी इन कहानियों में देख सकते है।साधारण आदमी की संवेदनाओं तथा मूल्यों को स्थान देने का श्रम भी उनकी रचनाओं की विशेषता है। "कैलाश बनवासी की कहानियॉ हमारे आस पास और निपट

---

8 नपुंसक : कृष्णा अग्निहोत्री, भूमिका से

9 मधुमती : नवंबर **2005**, पृ. **111**

वर्तमान की यथार्थपरक कहानियॉ होते हुए भी उन सपनों को बचाये रखने की भरसक कोशिश करती हैं जिन्हें धनतांत्रिक शक्तियॉ हमसे छनि लेना चाहती हैं। ये कहानियॉ न सिर्फ पठनीय हैं बल्कि इधर की अधिकांश कहानियों से अपनी अलग पहचान भी बनाती हैं।" [10]

गिरिराज किशोर

गिरिराज किशोर का जन्म **8** जुलाई, **1936** ई. को मुजफ्फर नगर, उत्तरप्रदेश में हुआ।प्रमुख कहानी संग्रह है 'नीम के फूल', 'चार मोती बे आब', 'पेपरवेट', 'रिश्ता और अन्य कहानियां', 'शहर दर शहर', 'हम प्यार कर लें', जगत्तारनी और अन्य कहानियॉ', 'गाना बड़े गुलाम अली खॉ का', 'वल्द रोजी', 'यह देह किसकी है' आदि।

राजनैतिक भ्रष्टाचार के कहानीकार श्री गिरिराज किशोर ने आधुनिक परिवेश के अन्तर्गत सोदेश्य सामाजिकता की कहानियॉ लिखी हैं।उन्होंने पद लोलुपता, स्वार्थपरता, भाई-भतीजावाद और राजनैतिक विघटन को अपनी लेखनी का मुख्य विषय बनाया है।अपनी कहानियों द्वारा समाज और मनुष्य, मनुष्य और मनुष्य तथा व्यक्ति और प्रतिष्ठान के बदलते रिश्तों की विसंगतियों और अन्तरविरोधों को चित्रित करने का श्रम किया है। "गिरिराज किशोर की कहानियों का मुख्य स्वर सामाजिक संघर्ष तथा मनोवृत्तियों का है।उनकी दृष्टि केवल यौन कुण्ठाओं तक ही सीमित नहीं है बल्की इनकी कहानियॉ जीवन के व्यापक सन्दर्भो की सफल अभिव्यक्ति प्रदान करती है।सामाजिक विषमताओं से घिरे मानसिक उलभावों में भटकते मानव मन का सही चित्र इनकी कहानियों में सहजता से उभारा गया है।"[11] ।

गिरिराज किशोर की कहानियों की एक और विशेषता यह है कि शिल्प चेतना के भीतर फैन्टेसी शिल्प प्रविधि का व्यापक स्तर पर प्रयोग।उन्होंने अपनी कहानियों में स्त्री पुरूष संबन्धों के विविध रूपों का, जो असहनीय हो या अस्वाभाविक हो, खुली और बेबाक अभिव्यक्ति की है। "गिरिराज किशोर के नारी चरित्रों की यह विशेषता है कि वे अपने संघर्ष का मोर्चा आप

---

10 बाजार में रामधन : कैलाश बनवासी, आवरण से

11 आठवें दशक की हिन्दी कहानी : मधु सिंह, पृ. **59**

संभाले हुए हैं। गिरिराज किशोर ने नारी की स्थिति और उसका संघर्ष बहूत ही यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है"।[12]

चित्रा मुद्गल

चित्रा मुद्गल का जन्म **10** दिसंबर **1944** में मद्रास में हुआ। उनके प्रमुख कहानी संग्रह है-'इस हमाम में', 'ग्यारह लंबी कहानियॉ', 'जहर ठहरा हुआ', 'लाक्षागृह', 'अपनी वापसी', 'चर्चित कहानियॉ' आदि।उनके द्वारा रचित बाल कथा संग्रह है 'सबक', 'जंगल का राजा' आदि ।अब तक चित्रा के **13** कहानीसंग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'आवां' उपन्यास पर बिड़ला फाउंडेशन का व्याससम्मान सहस्राब्दि का पहला अतरराष्ट्रीय इन्दुशर्मा कथा सम्मान ,लंदन इंग्लैंड हिन्दी अकादमी दिल्ली का साहित्यकार सम्मान, विकास काया फाउंडेशन द्वारा सामाजिक कार्यो केलिए विदुला सम्मान और उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा साहित्य भूषण सम्मान से वह समलंकृत हुई हैं।

समकालीन भारतीय महिला कथाकारों में चित्रा मुद्गल का एक विशिष्ट स्थान है। उनकी कहानियॉ मानवीय सरोकारों से गहराई से जुडी हुई हैं। आर्थिक दबावों का सीधा प्रभाव आज तेजी से हमारे समाज पर पड रहा है।उसे वैविध्यपूर्ण तथ्य और शिल्प के साथ भाषा के स्थर पर चित्रा मुद्गल ने प्रस्तुत किया है। "चित्राजी समाज के शोषित पीड़ित दलित स्त्री और पुरूषों की समस्याओं को यथार्थ चित्रों द्वारा एक ऐसी तिलमिलाहट पैदा करती हैं जो पाठक में परिवर्तन की आकांक्षा जगा देती है।"[13] श्रमिक वर्गो के हित केलिए चित्राजी में अद्भुत जागरूकता और संवेदना है।

पुरूष प्रधान समाज में नारी अनेक प्रकार के शोषण की शिस्कार बन जाती है।बेडियों में बन्द नारी को मुक्त कर नारी की अस्मिता की स्थापना करने में उनकी कहानियॉ बेहद उपयोगी सिद्ध हुई हैं।चित्रा मुद्गल की कहानियों में मॉ की वात्सल्य भावना के बारे में

---

12 कथाकार गिरिराज किशोर :डॉ. सुरेश सदावर्ते, पृ. **179**

13 आजकल :अप्रैल **2007**, पृ. **47**

श्रीमति सैय्यद मेहरून ने लिखी है "चित्रा मुद्गलजी आधुनिक जीवन के बदलते परिवेशों में बदलते हुए मानव मूल्यों में पवित्र वात्सल्य भावना में भी टकराहट और उलझन को व्यक्ति केन्द्रित बनते हुए देखने लगती और अनुभवों को सफलतापूर्वक अपनी कहानियों में प्रस्तुत करती हैं।" [14]

दीप्ति खण्डेलवाल

आधुनिक नौकरीपेशा पती -पत्नी की मानसिक संघर्ष का यथार्थ चित्रण करनेवाली दीप्ति खण्डेलवाल की प्रसिद्ध कहानी है संधिपत्र। अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं 'प्रिया', 'वह', 'तीसरा कोहरे', 'कठवे सच','सलीव पर' आदि।

दीप्ती खण्डेलवाल ने नारी जीवन की समस्याओं को अपने कथा सहित्य में अभिव्यक्ति दी है।अपनी रचनाओं में दीप्तीजी ने भोगे हुए यथार्थ को चित्रित किया है। आधुनिक युग में स्त्री और पुरूष दोनों जीवन बिताने के लिये शादी को अनिवार्य नहीं मानते हैं। पर उनकी राय में सुखी दांपत्य जीवन के लिये परस्पर सहयोग और एक दूसरे को समझने की आवश्यकता होती है। भारतीय परंपरा के अनुसार एक युवती किसी विवाहित मर्द से या परपुरूष से संपर्क नहीं रख सकती है।अपनी रचनाओं में दीप्ती खण्डेलवाल ने इस आम धारणा का खंडन किया है।आधुनिकिकरण के इस युग में दांपत्य जीवन में होनेवाले शिथिलीकरण, वेश्या समस्या, बाल विवाह के बाद स्त्री और पुरूष दोनों के परपुरूष और परस्त्री संबन्धों का खुला चित्रण श्रीमती दीप्ती खण्डेलवाल ने अपनी रचनाओं में किया है। "दीप्ति खंडेलवाल ने अपनी कहानियों में नारी के आधुनिक एवं परंपरागत रूप को अभिव्यक्ति प्रदान की है।आधुनिक नारी शिक्षित एवं आत्मनिर्भर है।इस कारण उसे अपने स्वतंत्र अस्तित्व का बोध है।वह पुरूष के सामने अपने आप को किसी भी मायने में कम नहीं मानती।दूसरी ओर परंपरागत आदर्शों की संकीर्ण लीक पर चलनेवाली ऐसी भी स्त्रियां हैं जो पुरूषों के द्वारा सताये जाने पर भी उन्हीं की बनी रहने केलिए विवश हैं।नारी के इन दो रूपों का विस्तृत चित्रण इनकी कहानियों में हुआ है।"[15]

---

14 दक्षिण भारत/ जनवरी, फरवरी,. मार्च : **2008**, पृ. **13**

15 हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी के बदलते स्वरूप : डॉ. सुधा बालकृष्णन, पृ. **34**

वे अपनी रचनाओं द्वारा आधुनिक युग में नारी की अस्मिता को कायम रखने केलिए नौकरी की आवश्यकता के बारे में कहती है, साथ –साथ नौकरीपेशा नारी की जिन्दगी की समस्याओं का चित्रण भी करती है।

नासिरा शर्मा

नासिरा शर्मा का जन्म सन **1948** को इलाहाबाद में हुआ। नासिरा शर्मा के प्रमुख कहानीसंग्रह हैं -'शामी कागज़','पत्थर', 'गली', 'संगसार', 'इब्ने मरियम', 'सबीना के चालीस चोर' और 'खुदा की वापसी'। इनकी कहानियॉ वर्तमान जनजीवन पर आधारित हैं।

नासिरा शर्मा नयी पीढी की कथाकार है।इनकी अधिकांश कहानियॉ मुस्लिम समाज की नारी जाती की घुटन, बेबसी और मुक्तिकामी छटपटाहट का विषयाधार लेकर लिखी गयी है।उन्होंने उस समाज की बुनियादी समस्याओं का चित्रण अपनी कहानियों में स्पष्ट रूप से दर्शाया है ।साथ ही ये कहानियॉ नारी की जातीय त्रासदी का मर्मान्तक दस्तावेज भी हैं ।

"इसकी सभी कहानियॉ मुस्लिम समाज की महिलाओं की कुछ ज्वलंत समस्याओं से ताल्लुक रखती हैं।नासिरा शर्मा ने महिला अधिकार चेतना के साथ ये कहानियॉ ज़रूर लिखी हैं .लेकिन उनका रूख प्रचलित अर्थों में नारीवादी नहीं है।वह महिलाओं के लिए कोई अलग दुनिया नहीं बसाना चाहतीं, न पुरूष को खलनायक और सुअर का बच्चा सिद्व करने में रस लेती हैं।" [16]

औरत के बारे में नासिरा शर्मा खुद ही लिखती है कि "मुझे लगा बेहतर है कि हम मिले अधिकारों को पहले हासिल करें फिर जो नहीं हैं उनका सवाल उठाएँ।...मगर क्या औरत कम कसूरवार है जो अपने अधिकारों को लेना नहीं जानती है, उसको समझती नहीं है, उसको पढ़ती और दूसरों को बताती नहीं है?"[17]'

---

16 मधुमती :अगस्त **2001** ,पृ. **84**

17 खुदा की वापसी – नासिरा शर्मा ,भूमिका से

प्रीतम अरोड़ा

प्रीतम अरोड़ा का जन्म **22** मार्च **1929** को शहर कोटकपूरा रियासत फरीदकोट पंजाब में हुआ।

प्रीतम अरोडा की कहानियों के बारे में प्रसिद्ध कथाकाार महेश दर्पण की राय है कि "प्रीतम अरोड़ा अपनी कहानियों में समाज की ओर से कुछ प्रश्न और जिज्ञासाएं उठाकर एक सार्थक हस्तक्षेप करने की कोशिश करती हैं। उनका यह कहना गलत नहीं कि इतिहास में वही लिखा जाएगा जो सुविधाजनक होगा। भावुक होते हुए भी यहां चुपके से वह कह जाती है कि भावना से कर्तव्य ऊँचा होता है।"[18]

मणिका मोहिनी

हिन्दी की महिला कहानीकारों में प्रमुख श्रीमती मणिका मोहिनी का जन्म **20** मई **1940** को दिल्ली में हुआ। उनके प्रमुख कहानीसंग्रह हैं –'खत्म होने के बाद', 'अभि तलाश जारी है', 'स्वप्नदंश', 'अपना अपना सच', 'ढाई आखर प्रेम का' आदि। 'दुश्मन', 'पतिव्रता', 'एक ही बिस्तर पर', 'विषयान्तर', 'देखादेखी', 'अपरिचय','मत रोओ आन्टी', 'उसका दुख', 'इन्नोसेंट लवर' आदि उनकी प्रसिद्ध कहानियॉ हैं।

मणिका मोहिनी ने अपनी कहानियों के माध्यम से स्त्री पुरूष संबन्धों को विशेष समझदारी और गहराई से चित्रित किया है। भारतीय नारी की निरीहता, विवशता, बेबसी, तनाव, असमंजस, घुटन, नारी जागरण, वैवाहिक समस्यायें, जीवन संघर्ष आदि को भली-भांति चित्रित करने में उन्हें उल्लेखनीय सफलता मिली। नारी मुक्ति के लिये उनके साहित्य में जोरदार प्रयास किया गया है। उनकी कहानियों में यौन तृप्ति या सेक्स का खुला चित्रण बडी मात्रा में मिलता है। मणिका मोहिनी ने लिखा है "यह सही है कि लेखक भावना शून्य नहीं हो सकता लेकिन आज का लेखक आधुनिक कहलाने के चक्कर में घर से बेघर होता जा रहा है। मेरे पति की दृष्टि में पति पत्नी के मध्य प्रेम उपहास की वस्तु है पत्नी को यथोचित आदर और सम्मान देना दकियानूसी होने

---

18 परछाईयां संकलन पर एक टिप्पणी -आमुख से

की निशानी है। असल में उनके शब्दकोश में 'म्यूचुअल एडजस्टमेंट' जैसा शब्द नहीं। मैंने हमेशा नारी की परंपरागत इमेज को वर्तमान संदर्भ में व्यक्त करने का प्रयास किया है। हमारे समाज में नारी की इमेज यही है कि वह पुरूष के सम्मुख कभी बेटी कभी पत्नी और माँ के रूप में घिघियाती रहे। यह पुरूष की आधिकारिक भावना का प्रतीक है। नारी की इस परंपरागत इमेज को तोड़कर एक नई इमेज स्थापित करना आज ज़रूरी हो गया है। वक्त की इस ज़रूरत के प्रति मेरी लेखनी सजग है। परन्तु प्रमाण मेरी बात को नहीं मेरी कहानियों को ही माना जाए।"[19]

मणिका मोहिनी की कहानियों में आधुनिक नारी के जीवन की स्थितियों तथा विसंगतियों का सजीव अंकन देखने को मिलता है। "मणिका मोहिनी की नारियाँ प्रेम की उस ताज़गी,गर्माहट और उन्मुक्तता की तलाश करना चाहती है जो संभवतः नर नारी के प्रथम आलिंगन में ही संभव है।"[20]

मन्नू भण्डारी

मन्नू भण्डारी का जन्म **3** अप्रैल **1931** को मध्यप्रदेश के भानपूरा में हुआ। उनकी प्रसिद्ध कहानी 'मैं हार गयी' **1959** में प्रकाशित हुई। 'मैं हार गयी', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'यही सच है', ' एक प्लेट सैलाब', ' त्रिशंकु' आदि उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं।

पारिवारिक जीवन के कहानीकार मन्नू भण्डारी की कहानियें मुख्यत: भारतीय नारी की नियती को उसके विभिन्न संदर्भों में देखती और आंकती है। उन्होंने नर-नारी के संबन्धों को व्याख्या करने का श्रम किया है। उसकी राय में अधिकतर स्थितियों में नारी चाहे पढी-लिखी हो या अनपढ विवाहिता हो या अविवाहित -पत्नी हो या प्रेयसी -कामकाजी नारी हो या नहीं नारी की स्थिती दयनीय है। नारी मन की क्षमता और दुर्बलता उनकी कहानियों का मुख्य प्रतिपाद्य रहा है। उनकी कहानिंयां सामान्यतः नायिका प्रधान हैं। मन्नुजी की नारियाँ आर्थिक दृष्टि

---

[19] ढाई आखर प्रेम का : मणिका मोहिनी, आमुख से

20 गद्य के प्रतिमान : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, पृ. **147**

से स्वतंत्र नहीं हैं, किन्तु सेक्स विषयक स्वतंत्रता में पुरूषों को अवश्य पराजित कर देने का प्रयत्न करती हैं। नारी जीवन के बहुविधीय पक्षों पर अपनी सूक्ष्म अंर्दृष्टि डालकर उनके जीवन यथार्थ को प्रस्तुत करने में मन्नु भंडारी सिद्धहस्त हैं।

"मन्नुभण्डारी की इन कहानियों को नैतिक अनैतिक की कसौटी पर नहीं कसा जा सकता। परंपरागत रूढ़ प्रतिमानों को आधार बनाकर इनका मूल्यांकन करने पर आसानी से इन नायिकाओं को कुलटा घोषित किया जा सकता है। लेकिन इन कहानियों का महत्व इसमें है कि ये नारी मन के अन्तरर्द्वद्वों और सोच को बड़ी बेबाकी और गंभीरता से उद्घाटित करती हैं। न वे स्त्री के आगे पुरूष को हीन और छोटा साबित करती हैं और न ही प्रेमी के आगे पति को। ये बड़े संयत और संतुलित ढ़ंग से नारी को उसके पूरी पारिवारिक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में रखकर देखती हैं और भरसक उसकी सोच और आचरण की एकता पर बल देती हैं। अपने प्रथम प्रेम के प्रति प्रगाढ़ता और उत्कटता का भाव इनमें पूरी तरह सुरक्षित है।" [21]

डॉ. देव कपूरिया की राय में 'मन्नु भ्ण्डारी की कहानियों की विशेषताएँ हैं-

1 मन्नु की कहानियों में प्रेम एवं सौन्दर्य की यथार्थ, किन्तु अरोमानी चरम सीमा विद्यमान है।

2 प्रेम की अपेक्षा सेक्स की प्रबलता है।

3 प्रेम एवं सौन्दर्य विषयक भावुकता प्रायः नहीं है; एक बुद्धिपरक आयोजन - समायोजन ही दृष्टिगत होता है।

4 नर-नारी संबन्धों में प्रतिस्पर्धा,अस्तित्व,रक्षा तथा व्यक्तिपरक भोगवाद की अनुभूति होती है। नारी की प्रदर्शनप्रियता तथा पुरूष की निस्तेज स्थिति की ओर मन्नु की कहानियॉ ध्यान आकृष्ट करती हैं।

---

21 नयी कहानी ः पुनर्विचार : मधुरेश, पृ. 259

5 शारीरिक पवित्रता-अपवित्रता अथवा नैतिकता-अनैतिकता आदि के प्रश्न मन्नु केलिए महत्वपूर्ण नहीं हैं।

6 पूरूषों के समान ही नारी के प्रेम एवं सौन्दर्यविषयक अधिकारों. विशेषत : उसकी सेक्स विषयक स्वतंत्रता का पोषण बडी निर्भीकता के साथ मन्नु की कहानियों में हुआ है।[22]

ममता कालिया

भारतीय नारी का मार्मिक और बारीक चित्रण करनेवाली ममता कालिया का जन्म **2** नवबर **1940** को उत्तरप्रदेश के मथुरा के वृन्दावन में हुआ। ममता कालिया जी के प्रमुख कहानी संग्रह हैं — 'छुटकारा', 'सीट नं छह', 'उसका यौवन', 'जॉच अभी जारी है', 'बोलनेवाली औरत', 'प्रतिदिन' आदि।

ममता कालिया की कहानियां आधुनिकता बोध से ओतप्रोत है ।नारी के प्रति समाज का उपभोगवादी दृष्टिकोण, संबन्धों की शिथिलता,. आजकल के अर्थप्रधान युग में टूटते पारिवारिक जीवन, अकेलेपन की पीडा, समाज में प्रचलित अंधविश्वासों और अनाचारों आदि को चित्रित करने में उनकी रचनाएँ सफल हुई हैं।आफिस और परिवार के उत्तरदायित्वों को एक साथ निभानेवाली नारी बेहद संघर्ष की शिकार हो जाती है।इन दोहरे दायित्व के बीच जूझनेवाली आधुनिक नारी का यथार्थ चित्र अपनी रचनाओं द्वारा प्रकट करने का श्रम ममता जी ने सफलतापूर्वक किया है। अकेलेपन की पीड़ा सहनेवाली निरीह नारी का मार्मिक चित्रण उनकी कहानियों में हुआ है। "ममता कालिया ने नारी जीवन के विविध पक्षों को सूक्ष्मता से पहचाना है।उनकी कहानियों में शिक्षित मध्यवर्गीय नारी की आशाओं आकांक्षाओं संघर्षों और स्वप्नों का यथार्थ परक अंकन हुआ है।नारी के प्रति परंपरागत जीवन दृष्टि को वे नकारती हैं।"[23]

---

22 हिन्दी कहानी साहित्य में प्रेम एवं सौन्दर्य तत्व का निरूपण : डॉ. देव कपूरिया, पृ. **334**

23 साठोत्तर हिन्दी कहानी : डॉ. के. एम मालती ,पृ. **83**

ममता जी ने लगभग **75** कहानियॉ लिखी हैं ।महानगरीय जीवन से और वहॉ की नौकरीपेशा नारी होने से जिन्दगी में जो समस्याओं, तकलीफों का उसको सामना करना पडता है, उन्हीं अनुभवों को उन्होंने अपनी कहानियों में चित्रित किया है। नौकरीपेशा नारी की जटिल स्थिति,समस्याओं, तकलीफों, पति — पत्नि के प्रेमहीन संबन्ध आदि उनकी कहानियों के मुख्य विषय रहे हैं। उनका लेखन विशेष रूप से भारतीय नारी के जीवन संदर्भ से भली भॉती जुडी है। दांपत्य जीवन में आदर्श को नहीं बल्कि यथार्थ को महत्व देनेवाली ममता कालिया विवाह को आवश्यक मानती है और दांपत्य जीवन में थोडी बहूत नोंक — झोंक को भी आवश्यक मानती हैं।"घर की चार दीवारों में कैद नारी की मुक्ति की चाह और उस केलिए उसे जो संघर्ष करना पड़ता है इसका चित्रण ममताजी की कहानियों का मूल बिन्दु है।आपने अधिकतर नारी को केन्द्र में रखकर ही कहानियॉ लिखी है।नारी की समस्यायें, उसकी प्रताड़ित जीवन, उसे झेलने पड़े संघर्ष आदि को उन्होंने चित्रित किया है।''[24]

महीप सिंह

प्रख्यात कथाकार महीप सिंह का जन्म **15** अगस्त **1930** को उत्तरप्रदेश के उन्नाव जिले के नई सराय गांव में हुआ।महीप सिंह सचेतन कहानी आन्दोलन के प्रमुख प्रवक्ता रहे हैं तथा पिछले चालीस वर्षों से साहित्यिक त्रैमासिक 'संचेतना' का संपादन तथा प्रकाशन कर रहे हैं।सन **1956** में 'उलझन' कहानी के साप्ताहिक हिन्दुस्तान द्वारा आयोजित प्रेमचन्द कहानी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करके वे हिन्दी साहित्य जगत मेंउच्च स्थान के अधिकारी बन गये।' सुबह के फूल', 'उजाले के उल्लू', 'घिराव', 'कुछ और कितना', 'कितने संबन्ध', ' धूप की अँगुलियों के निशान', 'सहमे हुए', ' इक्यावन कहानियॉ', 'मेरी प्रिय कहानियॉ', 'चर्चित कहानियॉ' तथा तीन खंड़ों में 'समग्र कहानियॉ' आदि महीप सिंह के प्रमुख कहानी संग्रह हैं।

---

24 केरल ज्योति : मई **2007**, पृ. **31**

उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान पुरस्कार भाषा विभाग (पंजाब), शिरोमणी साहित्यकार पुरस्कार, केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय पुरस्कार, हिन्दी अकादमी (दिल्ली) पुरस्कार, छठे विश्व हिन्दी सम्मेलन (सितंबर **1999** लंदन) में साहित्यिक सेवाओं केलिए विशिष्ट सम्मान, सन् **2000** में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा की ओर से उन्हें हिन्दी के विकास तथा प्रसार में उल्लेखनीय सेवाओं केलिए राष्ट्रपति के हाथों से प्रशस्ति पत्र प्राप्त हुआ। **2002** में इटावा हिन्दी सेवा निधी द्वारा जनवाणी सम्मान प्राप्त हुआ। सन् **2004** में पंजाबी अकादमी दिल्ली द्वारा परम साहित्यकार सम्मान भी प्राप्त हुआ। उत्तरप्रदेश का पत्रकारिता भूषण पुरस्कार भी प्राप्त हो चुका है।

महीप सिंह मानव संबन्धों के बीच सामाजिक व्यवस्था को बुनते चलते हैं। सचेतन दृष्टि के प्रति महीप सिंह आग्रहशील हैं। जीने के लिए सचेतन दृष्टि चाहिए ऐसा उनका मत है। वह स्त्री पुरूष संबन्धों के कहानीकार के तौर पर अधिक जाने जाते हैं। कहानी के पात्रों के बारे में वह स्वयं कहते है कि "मुझे महसूस हुआ है कि पुरूष की मानसिकता में टुच्चापन और स्वार्थ अधिक होता है। वह हर स्तर पर अवसर का लाभ उठाना चाहता है । भावनात्मक स्तर पर स्त्री चरम की स्थिति तक पहूंच जाती है जबकी पुरूष अपनी व्यावहारिक मानसिकता की सीमाओं को तोड़ नहीं पाता। फिर भी मेरी कहानियों में अवतरित सभी पात्रों की स्त्री और पुरूष रचना सायास नहीं हुई। यह सब कुछ अनायास हुआ है।" [25]

परिस्थितियों को गहरी अनुभूतियों से चित्रित करने में उन्हें बड़ी सफलता मिली है। नारी पात्रों के बारे में वे कहते हैं कि "कुछ लोग नारी देह को लेकर बहूत ऑब्सेस्ड हैं और नारी को देह से परे देख ही नहीं पाते हैं। मुझे ये लोग मध्ययुगीन मानसिकता से ग्रस्त लगते हैं। उस समय नारी को मोहपाश या माया मानकर उससे दूर भागने की बात कही गई और नारी देह ही सब कुछ है ऐसी रीतिकालीन मानसिकता भी आच्छादित रही। किसी भी समाज या वर्ग की मुक्ति उसकी समग्र मुक्ति से जुड़ी होती है। यह बात पुरूष पर भी लागू होती है। आज चारों ओर

---

25 आजकल : अप्रैल **2008,** पृ. **36**।

बलात्कार की जितनी घटनाएँ हो रही हैं उससे यह लगता है कि नारी की अपेक्षा पुरूष की देहमुक्ति कहीं अधिक आवश्यक है।"[26]

कला सौष्ठव उनकी विशेषता है।इनकी कहानियों में प्राणवत्ता सार्थकता गहन है।महीप सिंह ने आज के परिवेश में स्त्री पुरूष संबन्धों में आते परिवर्तन की अत्यंत सूक्ष्म परतों को अपनी कहानियों में उद्घटित किया है। "....महीप सिंह की रचनाओं में भी भटकी हुई नारी की व्यथा अनेक कोणों से अभिव्यक्त हुई है।"[27]

मार्कण्डेय

मार्कण्डेय का जन्म **2** मई **1930** को उत्तरप्रदेश के जैनपुर के बराई गांव के एक कृषक परिवार में हुआ। मार्कण्डेय की प्रकाशित प्रमुख कहानियॉ निम्नांकित हैं। 'हंसा जाई अकेला', 'सात बच्चों की मां', 'जूते', 'दूध और दवा', 'बीच के लोग', 'दौने की पत्तियां' आदि। 'भूदान', 'माही', 'सहज और शुभ', 'हंसा जाई अकेला', 'पानफूल', 'महुए का पेड' आदि उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं।

नया ग्राम्य कहानीकार मार्कण्डेय ने स्वातंत्र्योत्तर भारत में किसानों के खून को अपनी कलम की स्याही बनाया।उनके पात्र सामाजिक या मनोवैज्ञानिक यथार्थ के ही नहीं है।वे सहज मानवीय संवेदनाओं को प्रस्तुत करनेवाले हैं।सहज वाचन और शिल्पगत नवीनता के द्वारा उनकी कहानियॉ भारतीय जीवन की वास्तविकताओं को पाठकों के सामने प्रस्तुत करते हैं।डॉ. नामवर सिंह की राय में "ऐसा नहीं की जिन्दगी पर कहानियॉ पहले नहीं लिखी जाती थीं लेकिन जिस आत्मीयता के दर्शन मार्कण्डेय की कहानियों में होते हैं वह अन्यत्र दुर्लभ है।"[28] मार्कण्डेय की ग्राम्य कहानियों की भाषा और शिल्प संयोजन में मार्मिकता और कलात्मकता देखने को मिलता

---

26 आजकल ःअप्रैल **2008** पृ **39**।

27 नई धारा : फरवरी ,मार्च **2006**. पृ. **39** ।

28 मार्कण्डेय की कहानियॉ: मार्कण्डेय, आवरण से।

है। अपनी कहानियों के द्वारा ग्राम की पीडित प्रताडित नारी की अस्मिता केलिए वे वकालत करते दीख्र पडते हैं। "मार्कण्डेय की अधिकांश कहानियाँ ग्रामीण क्षेत्रों से संबद्ध हैं इन कहानियों में ग्राम जीवन के नये संदर्भों तथा वास्तविकताओं के प्रति मार्कण्डेय की निजी प्रतिकिया व्यक्त हुई है जिसके पीछे एक विशिष्ट राजनैतिक और सामाजिक आर्थिक दृष्टिकोण है।"[29]

मालती जोशी

मालती जोशी का जन्म **4**जून **1934** को औरंगाबाद, पूर्व हैदराबाद राज्य में महाराष्ट्रीयन परिवार में हुआ। उनकी **34** पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें दो मराठी कथा संग्रह, दो उपन्यास, पॉच बाल कथाएँ, एक गीति संग्रह और शेष कथा संग्रह सम्मिलित हैं। प्रमुख कहानिसंग्रह हैं-'मध्यान्तर', 'दादी की घडी', 'एक घर सपनों का', 'जीने की राह', 'विश्वास गाथा', 'पराजय', 'राग विराग', 'शोभा यात्रा' आदि। अहिन्दीभाषी कथा लेखिका के रूप में शिवसेवक तिवारी पदक रचना पुरस्कार - कलकत्ता **1983,** मराठी कथा संग्रह पाषाण केलिए महाराष्ट्र शासन का पुरस्कार - सन **1984,** अक्षर आदित्य सम्मान, कला मंदिर सम्मान, महिला वर्ष में स्टेट बैंक ऑफ इंदौर सम्मान, मध्यप्रदेश के राज्यपाल द्वारा अहिन्दीभाषी लेखिका के रूप में सम्मान **1985,** मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भवभूति अलंकरण से वर्ष **1998** में विभूषित आदि से सम्मानित है।

मालती जोशी ने अपनी अधिकतर रचनाओं में दांपत्य, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन को उभारा है। उन्होंने अधिकतम रचनाएँ भारतीय परिवेश को लेकर ही लिखी है। उन्होंने अपनी कहानियों द्वारा समकालीन मध्यवर्गीय नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं को समाज के समक्ष दिखाने का प्रयास किया है। अर्जिका नारी की समस्यायें, दहेज पीड़िता नारी की समस्यायें, विधवा की समस्यायें, अविवहिता नारी की समस्यायें, उपेक्षिता एवं परित्यक्ता नारी की समस्यायें, बॉझ की समस्या, निठल्लू पुरूष की पत्नी की समस्या, नारी के अकेलेपन की समस्या, कलंकिता

---

29 आठवें दशक की हिन्दी कहानी -मधु सिंह, पृ . **73** ।

नारी की समस्या आदि का जीवंत चित्रण उसकी रचनाओं में देख सकती है। "कथा-लेखिका ने बहूत सारी कहानियों में समकालीन मध्यवर्गीय नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं को चित्रित करने का प्रयास किया है...श्रीमती जोशी की अधिकांश कहानियॉ पारिवारिक जीवन तथा नारी जीवन की समस्याओं से होते हुए भी लेखिका का ध्यान परिवारेतर विषयवस्तु की ओर भी गया है।''[30]

मालती जोशी अपनी रचनाओं द्वारा नारी जाति के प्रति पूरी सहानुभूति उड़ेंल देती है और पुरूष वर्ग की असली तस्वीर उतारकर रख देने का श्रम भी करती है। अपनी अस्मिता केलिए प्रयासरत नारियॉ उनकी कई कहानियों में दीख पडती हैं।अपनी नारी पात्रों के बारे में वह खुद कहती है कि "स्त्री विमर्श तो मेरी हर कहानी में अन्तरधारा की तरह प्रवाहित है।बस यह नज़र नहीं आताा।" [31]

मेहरून्निसा परवेज़

मेहरून्निसा परवेज़ का जन्म **10** दिसंबर **1944** को मध्यप्रदेश के बालघाट जिले के बहेला गॉव में हुआ।उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं -'आदम और हव्वा', 'गलत पुरूष', 'टहनियों पर धूप', 'फालगुनी', 'अंतिम चढाई ', 'कोई नहीं', 'एक और सैलाब', 'आकाश नील', 'रिश्ते', 'ढहता कुतबमीनार' आदि।

सामाजिक व्यवस्था की विषमता और इससे उत्पन्न यातना से मुक्ति पाने के लिए छटपटाती नारी मेहरून्निसा परवेज़ के लेखन का मूल आधार है।उनके कथा साहित्य की मूल अनुभूति दांपत्य जीवन में उभरनेवाले तनाव है।इस तरह इनकी कहानी का दायरा बहूत सीमित हो जाता है।उनका लेखन जीवन की समग्रता को प्रस्तुत करता है। पीडित तथा शोषित नारी वर्ग, शोषित आदिवासियों की गरीबी और विवशता, मध्यवर्ग और निम्नवर्ग के अस्तित्वगत जीवन

---

30 मालती जोशी का कथा साहित्य :डा सुभाष तलेकर, पृ.**34.**

31 साक्षात्कार : मालती जोशी,मार्च **2005**. पृ . **19**।

संघर्ष और आंचलिकता भी उनकी रचनाओं में दर्शनीय है। "मेहरून्निसा परवेज़ की कहानियों में नारी जीवन की पीडाओं का यथार्थ चित्रण मिलता है।नये जीवन संदर्भों में नारी के बदलते चरित्र और बदलती तस्वीर उभारने के कारण मेहरून्निसा की कहानियॉ आकर्षक लगती हैं।" [32]

हमेशा पर्दा में रहनेवाली मुस्लिम स्त्रियों की घुटन भरी जिन्दगी को परवेज जी ने वाणी दी।इनके ही शब्दों में "या की इस समस्या के बिना कोई कथा रची ही नहीं जा सकती या कि यह किसी मानसिक बीमारी का संकेत है।अगर ऐसा है तो यह बहूत चिन्ता की बात है।" [33]

मृदुला गर्ग

मध्यवर्गीय लोगों के यौन प्रश्नों ,कुंठाओं और परेशानियों को सहज ढंग से चित्रित करनेवाली मृदुला गर्ग का जन्म **25** अक्टूबर **1938** को दिल्ली में हुआ।उनके प्रसिद्ध कहानीसंगह हैं 'उसके हिस्से की धूप', 'उर्फ सैम', 'कितनी कैदें', 'टुकडा टुकडा आदमी', 'डेफोडिल जल रहे हैं', 'ग्लेशियर से', 'दुनिया का कायदा' आदि

मृदुला गर्ग की अधिकतर कहानियॉ आम आदमी के दर्द की कथा चित्रित करती है। वर्तमान समाज में नारी किसी भी बन्धन में बन्धकर जीना पसंद नहीं करती है।सामाजिक बन्धनों में जकडी नारी के प्रति मृदुला गर्ग अपनी रचनाओं में सहानुभूती प्रकट करती हैं।विद्रोह का स्वर उठाकर नयी नैतिकता की स्थापना करने का प्रयास उनकी रचनाओं में दर्शनीय है। "मृदुलाजी ने विशेषकर नायिका प्रधान कहानियों की रचना की है।उनकी आत्मनिर्भर तथा आत्मसजग नारियों के सामने पुरूष पात्र बौने सिद्ध होते हैं।मृदुला जी की कहानियों में देहरी पर खडी झिझकती औरत देहरी लांघ बाहर आ जाती है।ये दमदार जीवंत औरतें हैं कोई आन्दोलन फांदोलन नहीं करती।परन्तु अपने निर्णय स्वयं लेती हैं और परवाह नहीं करतीं कि कोई क्या कहेगा।इनमें विवेक की दीप्ति है।मृदुला गर्ग की स्त्रियॉ अति साधारण घरेलू स्त्रियॉ होते हुए भी

---

32 साठोत्तर हिन्दी कहानी : डॉ. के. एम. मालती, पृ **82 –83**

33 सारिका : नवंबर **1979** ,पृ. **66**

बडे समर्थ भाव से अलग खडी दिखती हैं अपनी इच्छा और अनिच्छा के साथ।"[34] नारी के प्रति समाज के अयुक्तिक एवं अन्यायपूर्ण दृष्टिकोण पर कुछ कहानियों में वे तीखा प्रहार करती हैं। साधना अग्रवाल के शब्दों में "दुनिया का कायदा में मृदुला गर्ग ने यह बताया है कि यदि पत्नी मर जाए तो पति को तुरन्त पुनर्विवाह की अनुमति मिल जाती है लेकिन यदि पत्नी के साथ ऐसा होता है तो समाज उसको हीन दृष्टि से देखता है। इसमें इस कुरीति पर व्यंग्य किया गया है। पत्नी के मर जाने पर पुरूष का विवाह तो दुनिया का कायदा कहलाता है। इसके दूसरे भाग में क्लबों में डांस पार्टियॉ आदि दिखाई गई हैं"।[35]

मृणाल पाण्डे

नारी जीवन की विसंगतियों का हृदयग्राही चित्रण करनेवाली मृणाल पाण्डे का जन्म **26** फरवरी **1946** को मध्यप्रदेश के टकिमगढ में हुआ। वे 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' व 'वामा' की संपादक तथा दैनिक हिन्दुस्तान की कार्यकारी सम्पादक रहीं। स्टार न्यूज और दूरदर्शन के लिए हिन्दी समाचार बुलेटिन का संपादन किया। मृणाल पाण्डेय के प्रमुख कहानी संग्रह हैं –'चार दिन की जवानी तेरी', 'यानी कि एक बात थी', 'बचुली चौकीदारिन की कढी', 'एक स्त्री का विदागीत' आदि।

मृणाल पाण्डेय जी की कहानियों में प्राचीन और आधुनिक परंपराओं की टकराहट देखने को मिलती हैं। उनकी कहानियों में आधुनिक वातावरण के प्रभाव के कारण संबन्धों में उत्पन्न ह्रास का मामिक अंकन भी हुआ है। पुरूष प्रधान समाज द्वारा थोपी गयी रूढियों को तोडकर अस्मिता की तलाश में निरत नारियॉ उनकी कई कहानियों के केन्द्र में प्रतिष्ठित हुई हैं।

---

34 मृदुला गर्ग का कथा साहित्य : डॉ. सौ . तारा अग्रवाल, पृ. **53**

[35] वर्तमान हिन्दी महिला कथा लेखन और दांपत्य जीवन : साधना अग्रवाल, पृ. **89**

मंजुल भगत

मंजुल भगत का जन्म **22** जून **1936** को मेरठ में हुआ। उनके महत्वपूर्ण कहानीसंग्रह है 'बूँद', 'गुलमोहर के गुच्छे', 'आत्महत्या से पहले', 'कितना छोटा सफर', 'बावन पत्ते और एक जोकर', 'सफेद कौआ' और 'दूत द सर्च एन्ड अदर स्टोरीज' और 'अंतिम बयान'। मंजुल भगत को 'खातुल' पर हिन्दी अकादमी का साहित्य सम्मान प्राप्त हुआ।

अपने परिवेश की विद्रूपताओं और क्रूरताओं को यथातथ्य चित्रित करनेवाली है मंजुल भगत। उनके पात्र स्थितियों से जूझने में सक्षम हैं। "सामाजिक विसंगतियों विषमताओं और विद्रूपताओं की तीखी अभिव्यक्ति मंजुल भगत के लेखन की विशिष्ट पहचान है। लेकिन उनकी अभिव्यक्ति में अनावश्यक आक्रोश नहीं है। मानवीय गुणों की अभिव्यक्ति में वे उतनी ही समर्थ हैं। इनकी हर कहानी एक मुकम्मिल बयान होती है।"[36] आधुनिक विचारधारा से ओतप्रोत नारी उनकी रचनाओं में काफी संख्या में देखने को मिलती हैं। भारतीय नारी के आत्मबल और साहस की ओर उन्होंने संकेत किया है। उन्हीं के शब्दों में "एक आर बात है नारी द्वारा संपूर्ण विद्रोह मैं नहीं दिखला पाती क्योंकि मैं विद्रोह को कोई पलायन मार्ग नहीं मानती विद्रोह व्यक्ति से नहीं परिस्थितियों से होता है। जिनका डटंकर सामना करना और उनमें परिवर्तन ला पाना ही सच्चा विद्रोह है। इसलिए मेरी भी कोई नायिका पति और घर को छोडकर नहीं जाती। यह उसकी कायरता नहीं सामना करने और टकराकर टिके रहने की क्षमता है।"[37] मंजुल भगत के शब्दों में "एक भारतीय नारी के गहरे संस्कार इनमें हैं। भारत की संस्कृति, अस्तित्वबोध एवं स्त्री-स्वातंत्रय की चेतना आपकी रचनाओं में प्रचुर मात्रा में मिलती है।"[38]

---

36 नयी सदी की पहचान ः श्रेष्ठ महिला कथाकार संपादक ः ममता कालिया, पृ. **139**

37 तिरछी बौछार : मंजुल भगत ,भूमिका से।

38 मंजुल भगत -एक परिचय, . संग्रथन -जनवरी **2007** ,पृ . **24**।

रवीन्द्र कालिया

श्री रवीन्द्र कालिया सन **1960** के बाद की पीढी में विशिष्ट स्थान रखते हैं।लिखने के लिए वे जिन्दगी के आधुनिक दबाव को आवश्यक मानते हैं।उन्होंने सामाजिक विकृतियों पर गहरा व्यंग्य किया है। डॉ. महेश दिवाकर के शब्दों में "उन्होंने कम कहानियॉ लिखी हैं परन्तु जितनी भी लिखी हैं वे कहानी कला की दृष्टि से बहूत ही प्रभावशाली हैं।"[39] श्री रवीन्द्र कालिया की कहानियों की प्रमुख विशेषता यह है कि उनके अधिकांश पात्र विजेता नहीं स्वतंत्रचेता और कांती प्रणेता है।उनकी कुछ कहानियों में दलित और सर्वहारा वर्ग का शब्द प्रतिध्वनित है। कहानी की भाषा के संबन्ध में उनके अपने विशिष्ट विचार हैं।इस लिहाज से कि उनकी भाषा में बड़ी आत्मीयता और सहजता झलकती है।इसलिए उनकी कहानियों में शिल्प का चक्कर और भाषा की लग लपेट नहीं मिलती। "रवीन्द्र कालिया जीवन की विसंगतियों और विद्रूपताओं के कहानीकार हैं तथा अर्थहीनता के बोध को अलग अलग संदर्भो में संप्रेषित करते हैं।इन विसंगतियों को वे व्यंग्य के माध्यम से उद्घोषित करते हुए हर प्रकार की व्यवस्था और स्थापित मूल्यों को अस्वीकार की मुद्रा में अपनाते है।दांपत्य संबन्धों पर प्रेम के प्रवाहमंडल को छोड़कर वे उनकी वास्तविकताओं को पहचानते हैं।इनस्थितियों संदर्भो को वे सहर्ष सामाजिक परिवेश देखने की अनिवार्यता भी समझते हैं।"[40]

राजी सेठ

राजी सेठ का जन्म **4** अक्तूबर **1935** को उत्तरप्रदेश के नौशहरा गॉव में हुआ।उनके प्रमुख कहानीसंग्रह हैं –'अंधे मोड़ से आगे', 'तीसरी हथेली', 'यात्रा मुक्त' आदि।

अस्मिता के बारे में राजी सेठ कहती है कि "स्वावलंबी होने का अर्थ अपनी समस्याओं को सुलझाना मात्र ही नहीं है पर देश, समाज तथा परिवार को भारमुक्त करना भी है और सहयोगी भूमिका की पात्रता को पाना भी है।"[41]। राजी सेठ की कहानियॉ चिन्तनप्रधान

---

39 हिन्दी नई कहानी का समाज शास्त्रीय अध्ययन : डॉ. महेश दिवाकर, पृ **211**

40 रवीन्द्र कालिया की कहानियॉ :मधुरेश ,आवरण से

41 हिन्दी अनुशीलन : जून **2004**, पृ. **30**

हैं।उनके अधिकांश पात्र अकेलापन, शून्यता बोध आदि से पीडित हैं और कठिन परिस्थितियों में सही रास्ते का चुनाव करने में असमर्थ भी दिखाई पड़ती हैं।उनकी कहानियों में वर्तमान नारी जागरण की सजीव चेतना को स्थान प्राप्त हुआ है।राजी सेठ की कहानियों में गहरे और आन्तरिक संघर्षो की अभिव्यक्ति देखने को मिलती है।इनकी कहानियॉ मनुष्य की आन्तरिकता को साथ लेकर चलती हैं। "राजी सेठ की कहानियों में सामाजिक संबन्धों का टूटन व्यक्ति के छोटे छोटे अनुभवों और अनजान दर्द को रेखांकित करने का प्रयास है।उनकी कहानियॉ मनोभावों के सूक्ष्म अम्कन एवं मनस्थितियों की तार्किकता की पकड़ की दृष्टि से विशिष्ट है।"[42]

रमेश बक्षी

बीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में उभर आए सफल कहानिकारों में रमेश बक्षी का नाम आदर के साथ लिया जाता है।नई कहानी के क्षेत्र में उनका उल्लेख खूब हुआ है। इनकी कहानियों में प्रतीकों तथा संकेतों की भरमार होती है।रमेश बक्षी क्षणबोध को अधिक महत्व देनेवाले कहानीकार है।उन्होंने बदलती संवेदनाओं का चित्रण गहराई से किया है।

बक्षी अपने सारे लेखन में पूर्वदीप्ती पद्धति का प्रयोग करते है।इनके शिल्प पक्ष में संकेतों एवं प्रतीकों का प्रयोग सचेत तथा सायास है।इस क्षेत्र में रमेश बक्षी की देन विशिष्ट है।उनकी भाषा सहज सरल और प्रवाहमान है। "बक्षी अपने सारे लेखन में अतीतजीवी है इसलिए फ्लैश बैक (flash back)की टेकनीक उन्हें प्रिय है।इनके शिल्प पक्ष में संकेतों एवं प्रतीकों का प्रयोग सचेत तथा सायास है।इस क्षेत्र में रमेश बक्षी की विशिष्ट देन है।"[43]

---

[42] साठोत्तर हिन्दी कहानी : डॉ. के. एम. मालती, पृ. 66

43 कहानी नयीकहानी ः डॉ. नामवर सिंह, पृ 45

विजय चौहान

विजय चौहान का जन्म **1930** में पश्चिमी पाकिस्तान के लाहौर में हुआ। उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं 'एक बुतशिकन का जन्म' एवं 'धर्म क्षेत्रे कुरूक्षेत्रे'। उनकी कहानियॉ वातावरण प्रधान है। कथानक में घटनात्मकता और संवादों में औपचारिकता का पुट मिलता है।

शशिप्रभा शास्त्री

1984 के रचना पुरस्कार से सम्मानित शशिप्रभा शास्त्री का जन्म **1923** में उत्तरप्रदेश के मेरठ में हुआ। उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं 'धुली हुई शाम','दो कहानियों के बीच', 'अनुत्तरित', 'जोड बाकी', 'पतझड', 'एक टुकडा शान्तिरथ', 'उस दिन भी', 'चर्चित कहानियॅा', 'तलहटी' आदि।

शशिप्रभा शास्त्री की कहानियॉ नारीप्रधान हैं। नारी को केन्द्र में रखकर प्रेम के रोमांटिक स्वरूप के विविध पहलुओं तथा नारी की प्रेम संबन्धी समायाओं को उनके कथा साहित्य में स्थान मिला है। उनकी राय में सुखी दांपत्य जीवन के लिए वाद -विवाद, अधिकार और कर्तव्य की भावना का होना आवश्यक है। दांपत्य जीवन में यौन संबन्धों की महत्ता को वे स्वीकार करती हैं और इसे आवश्यक भी मानती है। महानगरीय जीवन की भागम-भाग में उलझते दांपत्य,मध्यवर्गीय नारी के एकाकीपन, नौकरीपेशा नारी की समस्यायें, प्रेम और विवाह की समस्यायें, पीढियों के अन्तराल और स्त्री पुरूष के आपसी संबन्धों, त्रिकोण प्रेम और अनमेल विवाह की समस्यायें विवाहेतर यौन संबन्ध, समलैंगिक संबन्ध, एकाकी परिवार की समस्यायें आदि उनकी रचनाओं में देखने को मिलते है। अस्मिता के लिये प्रयत्न करनेवाली नारी के सम्मुख उभरती चुनौतियों को उन्होंने अपनी कई कहानियों में अभिव्यक्त किया है। "शशिप्रभा शास्त्री कहानी को वैयक्तिक और सामाजिक संदर्भो से जुडा मानती है।"[44]

---

[44] साठोत्तर हिन्दी कहानी :डॉ. के. एम. मालती, पृ. **66**

शैलेश मटियानी

शेलेश मटियानी अतुल प्रतिभा के धनी हैं।वे रूसी कहानीकार मैक्सिम गोर्की की तरह अनुभव की तलाश में अल्मोडा से निकलकर तरह-तरह की जिन्दगियों को अपनी चैनी दृष्टि से निकट से देख लिया।उन्हीं को अपनी रचनाओं में उन्होंने सफलतापूर्वक पेश किया।

निम्नवर्गीय लोगेां को लेकर लिखी गई शैलेश मटियानी की कहानियॉ स्वानुभूत सी लगती है।उन्होंने यथार्थ को पहचानने की उत्कृष्ट कोशिश की है और उसे वास्तविक धरातल पर चित्रित करके अपनी प्रतिभा का सही परिचय दिया है। "शैलेश मटियानी की कहानियॉ परंपरित मूल्यों से जुड़ी होने पर भी नयी कहानी की कोटि में आती हैं क्योंकि उनके भीतर उसके शिल्प की सशक्त पकड़ है।रेखाचित्रात्मकता, आंचलिकता, विद्रोह, दलितोन्मेष, लघुमानवोन्मेष, स्वतंत्र्योत्तर बदलाव, सांकेतिकता वैयक्तिकता आदि की भरपूर पकड़ है।" [45]

शैलेश की कहानियों में स्थानीय रंगों का प्रचुर मात्रा में उपयेाग हुआ है। "निम्नवर्गीय लोगों को लेकर लिखी गयी शैलेश मटियानी की कहानियां स्वानुभूत सी लगती है।उन्होंने यथार्थ को पहचानने की उत्कृष्ट कोशिश की है और उसे वास्तविक भाव भूमि पर चित्रित करके अपनी प्रतिभा का सही परिचय दिया है।" [46]

सविता चड्ढा

सविता चड्ढा का जन्म **28** अगस्त **1953** में हुआ।उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं आजका ज़हर घटनाचक्र एक और भगवान आकाश कुसुम सफरनामा औरत का आदि।हिन्दी अकादमी द्वारा पुरस्कृत मातृश्री पुरस्कार से सम्मानित है।

---

[45] हिन्दी कहानी समीक्षा और संदर्भ ः डा .विवेकी राय , पृ. **59**

46 नयी कहानी पुनर्विचार : मधुरेश, पृ. **24**

सविता चड्ढ़ा ने बड़ी निर्भीकता के साथ कहानियॉ लिखी हैं।जीवन के जीवंत अनुभवों को साहस और सरलता के साथ वह प्रस्तुत करती हैं।उर्मिल सत्य भूषण की राय में उनकी कहानियॉ "औरत की कुलबुलाहट का जीवंत दस्तावेज है।" [47]

सिम्मी हर्षिता

साठोत्तर महिला कहानीकारों में सिम्मी हर्षिता का विशेष स्थान है।उनका जन्म **29** नवंबर **1940** को पाकिस्तान के रावलपिंडी में हुआ।उनकी पहली कहानी 'अपने अपने दायरे' 'संचेतना पत्रिका' के **1969** जून अंक में प्रकाशित हुई।

सिम्मी हर्षिता की कई कहानियों में अविवाहित नारी की समस्या को केन्द्र में रखा गया है। एक भारतीय स्त्री की दशा कितनी दयनीय होती है । वह विवाह से पहले अपने माता पिता के बंधनों में बंधी होती है और उसका अपना कोई अलग अस्तित्व नहीं होता।विवाह के बाद पति द्वारा और वृद्धावस्था में पुत्र द्वारा वह नियंत्रित होती है।आधुनिक युग के संघर्ष और द्वंद्व की शिकार होनेवाली नारी है उनकी कहानियों के अधिकांश पात्र। अपनी रचनाओं में लेखिका ने भारतीय स्त्री का सम्यक चित्रण किया है। डॉ.महेश दिवाकर की राय में "महिला कथाकारों की कहानियॉ प्राय: घर परिवार के अनुभव वृत्त या फिर प्रेम विवाह की रोमानी स्थितियों से मुक्त नहीं हो पाती हैं किन्तु इसके विपरीत 'धराशयी' कि कहानियॉ एक दूसरे स्तर पर अपनी पहचान स्थापित कराती है।" [48]

सूर्यबाला

सूर्यबाला का जन्म **25** अक्टुबर **1944** को उत्तरप्रदेश के वाराणासी के निकट मीरापुर में हुआ।उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं -'एक इन्द्रध्नुष', 'दिशाहीन', 'थाली भर चांद', 'मुंडेरे पर', 'गृहप्रवेश','सांझबाती', 'कात्यायनी', 'संवाद', 'इक्कीस कहानियां', 'सूर्यबाला की ग्यारह कहानियां'आदि।साहित्य में योगदान के लिए प्रियदार्शिनी पुरस्कार एवं रामनारायण सराफ

---

[47] नारी अस्मिता व अन्तर्वेदना की कहानियॉ ःसविता चड्ढ़ा, आवरण से

[48] हिन्दी नई कहानी का समाज शास्त्रीय अध्ययन : डॉ.महेश दिवाकर, पृ.**207**

पुरस्कार के अतिरिक्त दक्षिण भारतीय हिन्दी प्रचार सभा, नागरी प्रचारिणी सभा, मुंबई विद्यापीठ, आरोहीश्री त्रिवेणी कला संगम, सत्पुडा लोक संस्कृति परिषद आदि संस्थाओं द्वारा सम्मानित।

"सूर्यबाला की राय में आज की स्त्री यदि अपने परिवार और बच्चों के विकास के प्रति सचमुच चिन्तित है तो उसे अपनी महत्वाकांक्षाओं को कहीं न कहीं संयमित करना होगा।"[49] सूर्यबाला जी की कहानियों में जहाँ एक ओर संबन्धों या रिश्तों का खोखलापन है वहीं स्वार्थ के संकीर्ण दायरों का लेखा जोखा भी है।इनमें भाषा, शिल्प और कथ्य की विविधता है लेकिन इनका वैचारिक धरातल एक ही है।भौतिकता की अंधी दौड में सामाजिक और भावनात्मक रिश्तों की टूट जानेवाली रस्सियों को फिर से जुडने का प्रयास भी उनमें दर्शनीय है।उनकी अनेक कहानियों में नारी के अत्मसम्मान एवं उसकी अस्मिता को उजागर किया गया है।

इन कहानीकारों के अतिरिक्त इब्राहीम शरीफ भी नारी अस्मिता की कहानियाँ प्रस्तुत किया है। सत्तरोत्तर हिन्दी कहानीकार नारी अस्मिता की अभिव्यक्ति करनेवाले हैं।कहानिकारों ने नारी के सशक्त रूप का चित्रण हमारे सामने प्रस्तुत किया है।सत्तरोत्तर काल की नारियाँ जिन्दगाी की विभिन्न समस्याओं को भयभीत आंखों से नहीं अस्मिता भरी नज़रों से देखती है।ऐसी नारियों का चित्रण करने में उपर्युक्त कहानीकार दत्तचित्त है।

---

[49] वर्तमान हिन्दी महिला कथा लेखन और दांपत्य जीवन ःसाधना अग्रवाल, पृ. **235**